International Indexed, Peer Reviewed & Refereed Journal, ISSN-0974-2832, Jan, Feb, March, 2019 (Combined) ISSUE-120,121,122

शोध पत्र– शिक्षा

नाट्यीकरण प्रकियाऐं सामाजिक कौशल समस्यात्मक विद्यार्थियों के प्रति समसहभागीय दृष्टिकोण

* रविन्द्र कुमार मारु **डा. गिरिराज भोजक

*शोधार्थी, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ, राजस्थान
**सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ, राजस्थान

*सार– एक विद्यार्थी के सन्दर्भ में सामाजिक कौशल विकास से सम्बन्धित बहुत सी व्यवहारात्मक समस्याऐं देखी जा सकती हैं जो उनकी व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं विद्यालयी भी हो सकती हैं। यद्यपि यह समस्याऐं नई नहीं हैं, बल्कि यह तो जीव–मात्र के सामाजिक मनोविज्ञान से जुडी हुई एक स्वाभाविक प्रकिया है जो अलग–अलग व्यवहारों से नियंत्रित और प्रभावित होती हैं। तथापि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक विद्यालय के सन्दर्भ में यह एक गंभीर समस्या है जिसके नियन्त्रण एवं निराकरण हेतु विद्यालय प्रशासन हर समय जूझता रहता है। ऐसे में उस विद्यार्थी विशेष को अन्यों से अलग स्थापित कर दिया जाता है और उसके उपचार हेतु नित नये तरीके उस पर अधिरोपित कर दिये जाते हैं जिस कारण वह स्वयं को अन्यों के साथ सामंजस्य बैठाने में असमर्थ पाता है। स्थापित समाज के साथ तालमेल बैठाने के इस उपचारात्मक दबाव के कारण उसमें कई व्याधियाँ प्रविष्ठ हो जाती हैं जो कालान्तर में उसके समग्र विकास को प्रभावित कर सकती हैं। समाज के इस महत्वपूर्ण घटक को समाज की मुख्यधारा से जोडे रखने के लिये नाटयीकरण प्रकियाओं के प्रयोग किस हद तक इस समस्या के निराकरण में सहायक होती हैं, यह लेख इसी संभावना को तलाशता है।

मुख्य शब्द –नाटयीकरण प्रकियाऐं एवं सामाजिक कौशल

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसका सामाजिक विकास उसकी बढती आयु के साथ कमशः होता है। शिशु अवस्था में वह चेतन या अचेतन रुप में अधिकतर अपनी शारीरिक आवश्यकताओं से ही सम्बन्धित होता है, परन्तु शीघ्र ही अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने वाले व्यक्तियों के प्रति अनुकियाऐं दिखाने लगता है। उसकी प्रारम्भिक अनुकियाओं से यह मालूम पडने लगता है कि वह अपने पर्यावरण की वस्तुओं और व्यक्तियों को समझने लगा है। एक वर्ष की आयु तक वह वयस्क व्यक्तियों के प्रति अनुकिया के स्पष्ट प्रतिमान बना लेता है और आयु बढने के साथ साथ उसके प्रतिमानों में भी अन्तर आने लगता है। तीसरे वर्ष की आयु अर्थात् विद्यालय में प्रवेश की आयु के साथ ही वह सामूहिक खेलों में सहयोग दिखलाने लगता है और इस प्रकार शिशु के व्यवहार का सामाजिकरण होने लगता है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद् मर्फी इसीलिये एक नव–विद्यार्थी के सन्दर्भ में कहते हैं कि "वह बालकों की एक छोटी दुनिया का सदस्य बन जाता है जो सब उसकी बराबर आयु के हैं, यद्यपि विभिन्न समूहों में व्यवस्था के अनुसार आयु में अन्तर हो सकते हैं। बालकों की यह दुनिया इस समय उनके सामाजिक भोजन का अधिकांस होता है जिसे वह दूसरे बालकों के प्रतिमानों का अनुसरण करके उनकी कियाओं और उनके द्वारा उत्पन्न परिस्थितियों के प्रति स्वाभाविक प्रतिकिया करके, इस दबाव का विरोध करके और उनकी उपस्थिति मात्र से उत्पन्न हुए तनाव के बार–बार अनुभव के द्वारा इसको पचाता रहता है।"

शिशु के व्यवहार के इस सामाजिकरण को केन्द्र बिन्दु में रखते हुए उस पर स्वयं तथा समाज को उन्नत बनाने के निर्देशों का आवागमन प्रारम्भ हो जाता है और फिर यहीं से उस पर समाज में पूर्व से स्थापित तन्त्रों के अनुप्रयोगों और सामाजिक कौशल के मापन का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है जिसमें कुछ विद्यार्थी स्वयं को अन्यों से पृथक पाते हैं।

विद्यार्थी के सामाजिक विकास से सम्बन्धित समस्याऐं–

पावर्स के शब्दों में "सामाजिक विकास की परिभाषा सामाजिक समुदाय को समझने और उसके अनुकूल चरित्रों के मानवीय प्रतिमान बनाने में निर्देशित किया के द्वारा सतत आगे बढने वाली उन्नति के रुप में की जा सकती है।" इस हेतु जरुरत होगी उसके मस्तिष्क और शरीर को अनुमति देने की, एक ऐसे तालमेल को स्थापित करने के लिये, जो ना सिर्फ विद्यार्थी विशेष के सामाजिक विकास को बढावा देगी अपितु उसके मानसिक विकास को उचित अवसर प्रदान करते हुए उनकी उपलब्धियों को सफल समाज में स्थापित करने की राह अग्रसर करेगी। लेकिन ध्यान देने योग्य बात है कि परिवर्तन के नाम पर सामाजिक विकास में नकारात्मक तत्वों का प्रवेश वर्तमान समय में बच्चों–अभिभावक–परिवार, विद्यार्थी–शिक्षक–शिक्षणतन्त्र तथा नागरिक–समाज–व्यवस्था में टकराव का कारण बन रहा है।

विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल सम्बन्धित समस्याओं में न्यून उपलब्धि स्तर होना, सह–शैक्षणिक गतिविधियों में भाग नहीं लेना, कम मित्र होना, विद्यालय/कक्षाओं/शिक्षकों के प्रति नकारात्मक भाव बना लेना, आत्मविश्वास की कमी, भोजनावकाश/विद्यालयोपरान्त स्वयं को अलग–थलग रखना, निर्देशों की अवहेलना या उनके प्रति उदासीनता, आदि सम्मिलित हैं जो उनके सामाजिक कौशल विकास की तथाकथित कमियों के चलते ही होती हैं। एक विद्यार्थी के सन्दर्भ में बताई गई उक्त समस्याऐं अधिकांशतः समाज प्रदत्त ही होती हैं क्योंकि समाज जितना अधिक गत्यात्मक एवं परिवर्तनशील होगा उसमें उतनी ही अधिक समस्याऐं विद्यमान होंगी। वर्तमान में त्वरित गति से परिवर्तित हो रहे इस समाज के जटिल ताने–बाने में समस्त इकाईयों में सामंजस्य बैठा पाना मुश्किल हो रहा है और इसी कारण आधुनिक परिप्रेक्ष्य में एक समस्या विहीन समाज की कल्पना करना भी असंभव है।

वर्तमान सामाजिक वातावरण में जहॉ अभिभावकों की महत्वाकांक्षा, सामाजिक–आकांक्षा, सफल व्यक्ति का प्रभाव, संस्कृति, प्रतिस्पर्द्धा जैसे सामाजिक मूल्य विद्यमान हैं वहीं इच्छायें, व्यक्तित्व, पूर्वानुभव, मूल्य व रूचि, लिंग, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, वंश तथा परिवार की पृष्ठभूमि जैसे व्यक्तिगत आकांक्षा–स्तर भी उपलब्ध हैं जो कार्यों की सफलता व असफलता तथा आकांक्षा–स्तर को उच्च व न्यून बनाते हैं। समाज के अस्तित्व को बचाये रखने के उद्देश्य से इन समस्याओं का उन्मूलन करने के लिये मानव सदैव प्रयासरत रहा है तथापि जो स्वयं को समाज के स्वरुपों, संरचनाओं, संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं के अनुरुप नहीं ढाल पाता वो ही समस्या का पीडित घोशित कर दिया जाता है।

नाट्यीकरण प्रक्रियाऐं एवं सामाजिक कौशल हेतु आवष्यकताः–

लगभग सभी विद्यालयों में विकराल रुप ग्रहण करती जा रही इस समस्या से मुक्ति चाहने के लिये एक ऐसे तन्त्र की आवश्यकता प्रतीत हुई जहॉ सभी विद्यार्थियों को समान मानते हुए उनपर एक लोकतान्त्रिक प्रक्रिया का अनुप्रयोग किया जाए जहॉ विद्यार्थी को स्वयं के वैचारिक प्रतिमान स्थापित करने की स्वतन्त्रता प्रदान की जा सके। विद्यार्थियों का शिक्षकों/अभिभवकों से वार्तालाप करना, उन्हें सुनना और छूने वाले मुद्दों क सही तरह से निश्पादन करना, रोल प्ले, दैहिक भाषा के रहस्य खोलना, वर्ड गेम खेलना, समालोचनात्मक रवैया रखना, पत्रकारिता या ब्लोगिंग हेतु प्रोत्साहित करना, आदि जैसे कई प्रयास है जो इन

सप्ताह	उद्देश्य	विषयवस्तु	नाट्यीकरण प्रक्रियाऐं
प्रथम सप्ताह	विद्यार्थियों के लिये उन्मुक्त वातावरण का निर्माण और उन्हें अपने जीवन के निजी अनुभवों को दूसरों से साझा करने के लिये तैयार करना।	आपसी परिचय।	अलग–अलग नम्बर से चलना, नम्बरों के खेल, स्थिर चित्र
	कार्यशाला को अधिक से अधिक लोकतांत्रिक एवं विद्यार्थी–केन्द्रित बनाना।	विद्यार्थियों की अपेक्षाओं को जानना।	तालियों के खेल, मौखिक बातचीत
	छोटे से बडे समूह में विभिन्न प्रकृति के कार्यों के निष्पादन हेतु समन्वय की आवश्यकता को पहचानते हुए समन्वय की स्वाभाविक क्षमताओं को बढाना।	समन्वय	विविध तरह से चलना, लय और नम्बरों के खेल, चार्ट बनाना।
	किसी भी कार्य की सफलता में चुने हुए कार्य और समूह पर भरोसे की भूमिका के प्रति जागरुकता पैदा करना।	भरोसा	पकडम–पकडाई, अंधी कार और चालक, भरोसे के (विविध) खेल
	शारीरिक क्षमताओं को पहचानते हुए अपनी नजर में अपनी बाहरी छवि के भीतर छुपी विशेषताओं को ढूँढने का विचार पैदा करना।	हमारा शरीर और हमारी बाहरी छवि	शारीरिक गति के अभ्यास, मिट्टी–कुम्हार का खेल, भाव–भंगिमाओं पर रेखाचित्र
	इन्द्रियों की अपार सम्भावनओं को पहचानते हुए इन्हें विकसित करने के लिये प्रेरित करना।	हमारी इन्द्रियॉ	काल्पनिक तलवार और ढाल का खेल।
द्वितीय सप्ताह	विविध परिस्थितियों में होने वाली व्यक्तिगत अनुभूति एवं भावनाओं को सामने लाना और उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति	हमारी विविध अनुभूतियॉ एवं भावनाऐं	चार भाव–चार कोने, विविध निजी भावों को स्थिर छवि, आशु अभ्यास
	पसंद/नापसन्द को सामने लाकर उनकी जडता और लोचशीलता के विश्लेषण के लिये प्रेरित करना।	हमारी पसंद/नापसन्द	सबकी पसंद/नापसन्द के खेल, वाद–विवाद
	हमारी इच्छाओं और सपनों को सामने लाना। अपनी बाहरी और अन्दरुनी छवि को चित्र रुप में उभारकर छवि के प्रति सकारात्मक स्वीकार भाव पैदा करना।	हमारी इच्छाऐं, हमारे सपने और हमारी सम्पूर्ण छवि	रोल प्ले, फन्तासी कहानी लेखन, आशु अभ्यास, प्रकृति की सजीव–निर्जीव वस्तु से सम्बन्ध स्थापित कर चित्र बनाना।
	अपने घर की बाहरी संरचना के प्रति एक दृष्टि पैदा करते हुए मकान और घर के विचार को समझना।	हमारे घर या मकान	घर बनाने का खेल, मोडल या पेन्टिंग बनाना।
	अपने घर की छोटी से बडी चीजों से अपने रिश्ते को पहचानना।	घर की सबसे प्यारी चीज है।	घर की निर्जीव चीजों का रोल प्ले, पसन्दीदा चीज पर कहानी लेखन, आशु अभ्यास
	अपने घर में रहने वाले सदस्यों की दिनचर्या को वास्तविक धरातल पर देखने की कोशिश करना।	घर के लोग और उनकी दिनचर्या	विविध तरह से चलना, रोल–प्ले, आशु अभ्यास, गीत–कविता लेखन।
	अपने घर में रहने वाले लोगों के साथ बिठाये जाने वाले पलों में आपसी रिश्तों को खोजने के लिये प्रेरित करना।	क्या घटता है घर में जब घर के सब लोग साथ होते है?	रोल–प्ले, आशु अभ्यास, स्थिर चित्रण, बातचीत।
तृतीय सप्ताह	जिस जगह हम रहते हैं उस क्षेत्र की भौगोलिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अवगत कराते हुए उस क्षेत्र से अपने रिश्ते को समझना।	मैं, मेरा घर–परिवार मेरी शिक्षा और मेरा मोहल्ला/बस्ती/गॉव	कोलाज मोडल या पेन्टिंग, बातचीत।
	उन क्षेत्रों में जीवन बसर कर रहे विविध लोगों के बारे में जागरुकर करवाकर उनके प्रति सम्वेदनशील बनाना।	मेरे मोहल्ला/बस्ती/ गॉव के लोग और उनकी दैनिक चर्या	रोल–प्ले, विविध आशु अभ्यास, चर्चा
	बेहतर सामाजिक परिस्थितियॉ बनाने में लोगों के प्रयास पर लोगों के प्रयास पर समझ बनाना और प्रशंसा करने के लिये प्रेरित करना।	मेरे मोहल्ला/बस्ती/ गॉव के विवाद और उनके समाधान	रोल–प्ले, आशु भाषण, फोरम थियेटर चार्ट निर्माण
	अपने आसपास जीवन बसर कर रहे लोगों की समानता और विविधता को समझते हुए उनकी आपसी निर्भरता पर समालोचनात्मक समझ विकसित करना।	पडौसी बस्ती की दिनचर्या, समानता और विविधता।	विविध आशु अभ्यास, चर्चा
	विद्यार्थियों को सामाजिक रिश्तों को तोडने वाली परिस्थितियों के कारण का विश्लेषण कर उसके सम्भावित रचनात्मक समाधान ढूंढने हेतु प्रेरित करना।	आपसी रिश्तों को तोडने वाले लोग	रोल–प्ले, स्थिर चित्रण, फोरम थियेटर चार्ट/कोलाज निर्माण
	विद्यार्थियों को सामाजिक रिश्तों को जोडने वाली परिस्थितियों के कारण का विश्लेषण कर उसके सम्भावित रचनात्मक समाधान ढूंढने हेतु प्रेरित करना।	आपसी रिश्तों को जोडने वाले लोग	रोल–प्ले, स्थिर चित्रण, फोरम थियेटर चार्ट/कोलाज निर्माण
	विद्यार्थियों ने क्या सीखा? जानना। सीखी गई चीजों को अपने आसपास के समाज से रिश्ता बनाना।	कार्यशाला का फीडबेक सत्र	बातचीत, समूह चर्चा

समस्याओं के निराकरण हेतु किये जा रहे हैं किन्तु इन सबसे अलग एक और माध्यम है नाटयीकरण प्रक्रियाऐं, जो इन विद्यार्थियों को एक ऐसा प्लेटफार्म प्रदान करती है जहॉ वे अपने शिक्षण तन्त्र में रहते हुए ही अपनी सामाजिक कौशल सम्बन्धी व्याधियों को सहज ही दूर कर सकें एवं स्थापित समाज में सामंजस्य बैठाने में सक्षम हो सके।

एक नाटक के प्रमुख तत्व/अवयवों में कथावस्तु, पात्र, रस (भाव) एवं अभिनय होते हैं जिनके संयोग से ही एक नाटक का जन्म होता है। कथानक से प्रारम्भ करने से लेकर नाटक की प्रस्तुति तक होने वाली प्रक्रियाओं को ही नाटयीकरण प्रक्रियाऐं कहते हैं। यह प्रक्रियाऐं नाटक के निर्माण की अपेक्षा अन्य कई पहलुओं में अधिक महत्वपूर्ण एवं व्यवहारिक होती है। अध्यापन में प्रायोगिकता की प्रासंगिकता को स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन ड्यूवी के अनुसार बालक क्रिया के द्वारा ही कार्य को सीखता है। उनके अनुसार शिक्षा का तात्पर्य प्रयोग एवं क्रियाशीलता के माध्यम से अनुभवों को विकसित, परिवर्तित और संशोधित करना है। उनके अनुसार यह प्रायोगिक पद्धति "करके सीखने के सिद्वान्त" पर बल देती है। इस प्रक्रिया में निरीक्षण, तर्क, निर्णय, कल्पना एवं अधिक इन्द्रियों का प्रयोग होने से बालक के मानसिक एवं सामाजिक विकास की प्रक्रिया तीव्र होती है। लेव व्योगोत्सकी का मानना था कि "बालक दैनिक जीवन में प्रत्ययों व अवधारणाओं से भी सीखता है। विद्यार्थी समूह, अध्यापाकों एवं सन्दर्भित ढॉचे से सीखते हैं, जब बालक के सम्मुख वयस्कों द्वारा पूर्व स्थापित अवधारणा को प्रस्तुत किया जाता है तो उसे अपनी स्मृति में धारण कर लेता है। इसके पश्चात् वह उस सामान्यीकरण पर स्वयं विचार करता है। लेकिन बालकों को अपने साथियों से प्रभावित भी होना चाहिए और स्वयं का अन्वेशण करते रहना चाहिये।"

विद्यार्थी की शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और कभी–कभी दार्शनिक सक्रियता को दृष्टिगत रखते हुए इस एकीकृत एवं सामूहिक अनुभवपरक रंग–प्रक्रिया की विषय–सामग्री ऐसी हो जिससे विद्यार्थी जीवन से अपना सीधा जुडाव महसूस करते हुए उसकी खोजबीन करें और ऐसे जीवन्त, कल्पनाशील, संवेदनशील और सामाजिक रुप से समायोजित व्यक्ति के रुप में विकसित हो सके।

वर्तमान शोध प्रक्रिया–

शैक्षिक तन्त्र द्वारा समय–समय पर निर्धारित की जाने वाली पाठ्य सामग्रियों एवं शैक्षिक प्रविधियों के साथ शिक्षक–विद्यार्थी एवं विद्यार्थी–विद्यार्थी के मध्य संवाद स्थापित करते हुए किसी निष्चित विषय सामग्री का नाट्यीकरण प्रक्रियाओं से वांछित उपलब्धि अर्थात् सामाजिक कौशल में विकास प्राप्त करना ही वर्तमान शोध कार्य का मुख्य ध्येय रहा। इस हेतु कोटा शहर के एक निजी विद्यालय में कक्षा 9 एवं 10 के तीस विद्यार्थियों के एक समूह पर नाट्यीकरण प्रक्रियाओं/प्रविधियों का प्रयोग किया गया, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल विकास से सम्बन्धित विविध आयामों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया।

शोध हेतु चयनित समूह पर निम्नानुसार तीन सप्ताह के मोड्यूल (2 घण्टे प्रतिदिवस) के अनुसार विविध नाटयीकरण प्रक्रियाऐं प्रयोग में ली गई। प्रत्येक दिवस प्रक्रिया समाप्ति उपरान्त औपचारिक बातचीत/प्रश्नोत्तर/रचनात्मक लेखन के माध्यम से फीडबेक प्राप्त किये गयेः–

देखे तालिका 1

निष्कर्ष–

एक विद्यार्थी के सम्पूर्ण विकास के सन्दर्भ में सामाजिक विकास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रभावी सामाजिक विकास हेतु महत्वपूर्ण माने गये विविध बिन्दुओं का नाटकीय प्रस्तुति में प्रमुख रुप से प्रयोग होता है। विदित रहे कि एक औपचारिक नाटकीय प्रस्तुति विविध अनौपचारिक प्रक्रियाओं से परिशोधित होकर बनने वाला अन्तिम उत्पाद होता है जो प्रतिभागी को स्वाभिव्यक्त करने का एक ऐसा विश्वसनीय अवसर प्रदान करता है जहॉ वह अपने अचेतन मन की गॉठों को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रुप से सम्प्रेषित कर पाता है। वर्तमान शोध में भी प्रेक्षण आधारित निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करते हैं कि एक विद्यार्थी के सन्दर्भ में सामाजिक कौशल हेतु आवश्यक माने गये मूलभूत तत्वों का सुधारात्मक विकास होता है। विद्यार्थियों द्वारा मोड्यूल समाप्ति पर दिये गये फीडबेक भी इस वाक्य की पुष्टि करते हैं। इस प्रकार नाटक के प्रतिभागियों के रुप में एक विद्यार्थी के लिये जाने–अनजाने ही ये नाट्यीकरण प्रक्रियाऐं उनकी सामाजिक त्रुटियों को सुधार देती हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 शर्मा, त्रिपुरारी (2015)– रंग–प्रसंग, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली।
2 महता, डी0डी0 (2010)– शैक्षिक तकनीकी, लक्ष्मी बुक डिपो, भिवाडी।
3 शैक्षिक तकनीकी, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा।
4 अल्लाना, अमाल (2012): रंग–प्रसंग, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली।
5 सिंह, श्रीमती संजय. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–29, अंक 2, जुलाई–दिसम्बर 2010 पेज 94
6 Rawat, Suwarn - Theatre: its significance in education. Punjab University. 2008
7 Chaluvarajaswamy, KT - Effect of theatre education activities on theatre proficiency moral judgement and emotional intelligence of secondary school students.University of Mysore-2014
8 Sorenson, H- Psychology in Education, MC Graw Hill Book Co. New York, (1954), P.209.
9 Powers, FF- Education psychology, Prentice Hall Inc., (1945), pp. 102-3.
10. www.ugcjournal.com